करीबी रिश्तों में शादी का जीव विज्ञान

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

कुछ वर्षों से खून के रिश्ते और शादी के बीच स्वास्थ्य सम्बंधी मुद्दों पर बहस चली आ रही है। सगोत्र शादी से जन्मे लगभग 11,000 बच्चों का विस्तृत विश्लेषण करने पर पाया गया कि 386 बच्चे जन्मजात विकृतियों से पीड़ित थे। यह आंकड़ा खून के रिश्तेदारों से इतर शादी से जन्मे बच्चों में 1.6 प्रतिशत है और खून के रिश्तों के संदर्भ में 3 प्रतिशत है। ईमॉन शेरीडेन और सहयोगियों ने ब्रैडफोर्ड (यू.के.) में जन्मे बच्चों के परिणामों का विश्लेषण किया। ब्रैडफोर्ड एक छोटा-सा इलाका है जहां 16.8 प्रतिशत आबादी पाकिस्तानी मुस्लिमों की है। यह बहुत ही छोटा समूह है जहां सगोत्र शादियां होती हैं। इनमें 75 प्रतिशत शादियां चाचा-मामा के बच्चों (कज़िन्स) के बीच हुई हैं।

इस तरह की शादी से जन्मे बच्चे को एकाधिक जन्मजात विकृतियों का सामना करना पड़ सकता है। इस सूची में हृदय सम्बंधी परेशानी सबसे ऊपर है; उसके बाद स्नायु विकार, भुजाओं में विकृतियां वगैरह हैं। शेरीडेन और उनके साथियों ने इन बच्चों की दिनचर्या, धूम्रपान और शराब की लत, आमदनी, गरीबी और दूसरे कारकों को भी देखा तो पाया कि रिश्तेदारी में शादी ही दोषी है। उनका यह विश्लेषण *दी लैंसेट* के 4 जुलाई के अंक में प्रकाशित हुआ है।

इस तरह के करीबी समूह में शादी करने पर समस्या तब सामने आती है जब दो जीवन साथियों में से कोई एक किसी बीमारी के जीन्स का वाहक है। जब आपकी शादी समुदाय में ही किसी ऐसे व्यक्ति से होती है, जो इसी तरह के दोष से पीड़ित है तब बच्चे को इस तरह के जीन्स की दो प्रतियां विरासत में मिलती हैं। लेकिन जब आप समुदाय के बाहर शादी करते हैं तब आप ज़्यादा बड़े जीन समूह में से चयन करते हैं, और इस बात की संभावना कम हो जाती है कि बच्चे को विरासत में दोनों एक-से जीन्स मिलेंगे। ऐसे बच्चे को कम समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

बेशक, ब्रैडफोर्ड में प्रकोप केवल 3 प्रतिशत है। ज़्यादातर बच्चे सामान्य हैं और गैर-कज़िन शादियों से जन्मे बच्चों के बराबर ही स्वस्थ हैं। इसके अलावा, इस निष्कर्ष को अन्यथा न लिया जाए। यह पाकिस्तान या इस्लाम का मामला नहीं है। शोधकर्ताओं को लगा कि ब्रैडफोर्ड एक बड़ा और अंतःप्रजनन करने वाला समूह है, वहां इस तरह का अध्ययन सांख्यिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष दे सकता है। जहां यूके में 37 प्रतिशत पाकिस्तानी शादियां कज़िन्स के बीच होती हैं वहीं पूरे यूके में ऐसी शादियां मात्र 1 प्रतिशत हैं। इसी तरह के अध्ययन जिप्सियों के साथ, पारसियों पर, येरुसेलम में अरब लोगों पर किए गए हैं। यहां तक कि एक अध्ययन सन 2002 में डॉ. कुमारमनिकावेल ने दक्षिण भारत (ज़्यादातर हिन्दू) में किया था।

दक्षिण भारत में कुछ समुदायों में सगोत्र शादियां होती हैं। गोत्र को बहुत गंभीरता से लिया जाता है और सामान्यतः समान गोत्र के स्त्री-पुरुष में शादियां नहीं हो सकती हैं। इस प्रकार भाई अपनी बहन से विवाह नहीं कर सकता है। लेकिन वह अपने प्रथम कज़िन से शादी कर सकता है (कुछ दिनों पहले तक तो करना पड़ता था)। इसी तर्क के आधार पर मामा-भानजी की शादी को अनुमति दी गई है और होती है। तमिल में बहु अपनी सास को मामी कहती है।

ऐसा माना जाता है गौत्र परंपरा को आनुवंशिक दूरी बनाए रखने के लिए बनाया गया था। और इसे निकट सम्बंधी विवाह की समस्याओं से सुरक्षा भी माना जाता है। यह सच है कि यहां आनुवंशिक दूरी का अर्थ मात्र निकट सम्बंधी से दूरी नहीं है मगर फिर भी शादियां एक हद तक आनुवंशिक सम्बंधियों के बीच ही होती हैं। वैसे इसका अर्थ यह नहीं हैं कि कोई लड़का किसी अन्य समुदाय में शादी करेगा जहां दूर-दूर तक परिवार का कोई वैवाहिक या आनुवंशिक सम्बंध न रहा हो।

शादियां सामाजिक अनुबंध हैं जिनका मकसद आनुवंशिक उत्पाद यानी परिवार बनाना होता है। परिवार के पास प्रथाएं, ज़ायदाद, निष्ठाएं, विश्वास और पूर्वाग्रह होते हैं। इनके द्वारा निर्धारित होता है कि कौन किससे शादी करेगा।

सोचिए कि क्यों मिस्र के फरोआ भाई-बहन की शादी करते थे। कुछ क्षण के लिए पारसी समुदाय या रूस के अशकानाज़िम यहूदियों की शादी के बारे में भी विचार कीजिए। यदि आप समुदाय के बाहर शादी करेंगे तो आप समाज से बहिष्कृत कर दिए जाएंगे (इस मामले में कहीं-कहीं जेंडर पूर्वाग्रह भी नज़र आते हैं)। और यह देखिए कि ऐसे समुदायों की जनसंख्या पीढ़ी-दर-पीढ़ी कम होती गई है। खाप एक बहुत ही घृणित तंत्र है जो हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में अस्तित्व में है। परंपरा के विरुद्ध शादी करने वाले जोड़े को मौत की सज़ा दी जाती है। क्या ऐसी सामाजिक प्रथाएं आनुवंशिक शुद्धता को बनाए रखने के लिए हैं या ज़ायदाद, आस्थाओं, झूठे सम्मान और विशिष्टता को बनाए रखने के लिए हैं? जीव विज्ञान इस बारे में क्या कहता है?

कई सूक्ष्मजीवों के लिए बच्चे पैदा करना आसान है। ये आसानी से बंट-बंटकर दो, फिर चार, आठ और पूरी पीढ़ी पैदा कर सकते हैं। इन्हें किसी जीवनसाथी की ज़रूरत नहीं, यह पूरी प्रक्रिया अलैंगिक है। लेकिन जब विकास के क्रम में लैंगिक प्रजनन आया, तो विविधता उभरने लगी। संक्षेप में, प्यार-व्यार की बात छोड़ दें, तो संभोग का अर्थ है जीन्स का मिश्रण। जब नए जीन्स जुड़ते हैं, तो नए गुणधर्म अर्जित हो जाते हैं। इस विविधता ने ही जीवों को नई-नई क्षमताएं दी हैं। इस प्रकार जीव विज्ञान की नज़र से देखें तो संतान को ज़्यादा और स्वस्थ जीन्स मिलना चाहिए। इसका मतलब यह है कि आप पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए कि आप किससे संभोग करते हैं। जीव विज्ञान तो कहेगा कि जाओ और बच्चे पैदा करो। जीवन का रस विविधता में है। दूसरी ओर, शादी और परंपरा सामाजिक मामले हैं। परंपराएं और नियम यह तय करते हैं कि आप किससे शादी कर सकते हैं और किससे नहीं। यह ज़िन्दगी की सच्चाई है। ***(स्रोत फीचर्स)***